

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक का वर्चुअल मोड में आयोजन

संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक 18 मई, 2020 को वर्चुअल मोड में आयोजित की गई थी। संस्थान की नव गठित आरएसी (2020-2022) की यह पहली बैठक है। आरएसी के अध्यक्ष प्रो (डॉ) बस्करन मनिमरन, आरएसी सदस्य डॉ० के.जी. पद्मकुमार, डॉ० शरद कुमार जैन, डॉ० एस० सी० पाठक और डॉ० बी० पी० मोहंती सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) ने बैठक में भाग लिया। आरएसी के सदस्य सचिव डॉ० ए० के० दास ने आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों के औपचारिक परिचय के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। डॉ० जे० के० जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), ने विशेष रुचि ली और अपनी मूल्यवान टिप्पणियों के साथ बैठक में भाग लिया और समिति से अनुरोध किया कि वह संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की प्रगति के लिए सलाह दे। आरएसी की सिफारिशों को आईआरसी के विचार-विमर्श में शामिल करने की भी उन्होंने सलाह दी। यह बैठक 27-28 मार्च, 2020



के दौरान आयोजित की जानी थी, लेकिन महामारी के कारण इसमें देरी हुई। अध्यक्ष, प्रो० मणिमारन ने पिछले दिनों संस्थान की शानदार उपलब्धियों को याद करते हुए और इस प्रतिष्ठित संस्थान के आरएसी के अध्यक्ष के रूप में सम्मानित होने की सराहना की। डॉ० पाठक ने पिछले 40 वर्षों से संस्थान के प्रति अपने लगाव को याद करते हुए कहा कि इसी संस्थान से उन्होंने साइंटिस्ट के रूप में अपना करियर शुरू किया था। डॉ० जैन ने संस्थान द्वारा निर्धारित जल संसाधन प्रबंधन और ई-फ्लो मॉड्यूल से जुड़े होने के संबंध में इस संस्थान के साथ अपना गहरा लगाव व्यक्त किया। डॉ० पद्मकुमार ने संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों में अपनी गहरी रुचि व्यक्त की और भविष्य में संस्थान को सहयोग देने और इसे आगे बढ़ाने की बात बताई। डॉ० बी. पी. मोहंती, सिफरी सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में, इस समिति के सभी सदस्यों को संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों को नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए सुझाव देने के लिए आमंत्रित किया। निदेशक डॉ० बि.के. दास ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आरएसी के सभी माननीय सदस्यों ने संस्थान के गौरवशाली अतीत और पिछले 74 वर्षों के दौरान देश भर में की जा रही गतिविधियों के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने नई समिति के सदस्यों से इस देश की पोषण सुरक्षा को संबोधित करने के लिए संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों को निर्देशित करने का अनुरोध किया। डॉ० दास ने संस्थान द्वारा 2019 के दौरान किए गए समग्र उपलब्धि और कार्यों को भी प्रस्तुत किया। प्रभागों के प्रमुखों, क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुख और स्टेशनों ने अपने संबंधित प्रभागों, इकाइयों और केंद्रों में विभिन्न संस्थान परियोजनाओं और अन्य गतिविधियों के तहत

उपलब्धियां को भी प्रस्तुत किया गया। संबंधित प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर्स द्वारा दो आईसीएआर नेटवर्क प्रोजेक्ट की उपलब्धियां भी प्रस्तुत की गईं। अध्यक्ष प्रो० मणिमारन और अन्य सदस्यों ने समग्र प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और संस्थान द्वारा की गई विभिन्न पहलों की भी सराहना की। अंत में, अध्यक्ष और सदस्यों ने अपनी समापन टिप्पणी की और आरएसी की सिफारिशों के रूप में कुछ बिंदुओं का सुझाव दिया। निदेशक डॉ० बि.के. दास ने अपने मूल्यवान सुझावों और टिप्पणियों के लिए अध्यक्ष और सभी आरएसी सदस्यों, उप महानिदेशक (मत्स्य विभाग) और सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) को धन्यवाद दिया, जो संस्थान को और अधिक गौरव के पथ पर ले जाने का प्रयास करेंगे। डॉ० ए.के. दास, आरएसी सदस्य सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन की औपचारिकता के साथ बैठक समाप्त हुई।



मुख्य शोध उपलब्धियां

प्रयागराज संगम में गंगा नदी के जल गुणवत्ता विश्लेषण में पिछले वर्ष की तुलना में पारदर्शिता, पीएच और घुलित ऑक्सीजन (डीओ) के स्तर में अधिक परिवर्तन नहीं देखा गया। पर कार्बोनेट (CO₃), बाइकार्बोनेट (BiCO₃) और क्लोराइड (Cl₂) का स्तर पिछले साल की तुलना में कम हुआ है। विशिष्ट चालकता, कुल घुलित ठोस तत्व और कुल कठोरता पिछले साल से कम देखी गई है और अंतर मान भी अधिक दर्ज किया गया है।

मई के महीने में बैरकपुर में गंगा नदी का जल गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया जिसमें पीएच 7.23-7.57, बीओडी 0.93-1.8 मिलीग्राम / ली., घुलित ऑक्सीजन 6.4-7.6 मिलीग्राम / ली., विशिष्ट चालकता 370-410 μ / सेमी पाया गया। इससे यह पता चला कि COVID 19 महामारी में लॉकडाउन के दौरान पानी की गुणवत्ता में सुधार देखा गया।

बिहार के आर्द्रभूमि में मछली पालन मई 2020 से शुरू किया गया था। संस्थान द्वारा विकसित और प्रदत्त तकनीकों के कारण बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के कररिया और कोठीया मन में कोविड 19 के कारण लॉकडाउन अवधि के दौरान क्रमशः 5.0 और 4.0 मीट्रिक टन मछलियों को पकड़ा गया। किसानों को औसतन भारतीय प्रमुख कार्प से रुपये 280 प्रति कि.ग्रा., विदेशी कार्प से रुपये 200 / किग्रा और छोटी मछलियों से रुपये 150 / किग्रा. आय प्राप्त हुआ। मछुआरों को लगभग 5 से 7 लाख रुपये की आमदनी हुई है। अतः इस लॉकडाउन अवधि में भी संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों के कारण मछुआरों की आमदनी में बहुत अधिक वृद्धि हुई है और इस सफलता को मीडिया द्वारा भी कवर किया गया है जैसे दूरदर्शन समाचार, ज़ी बिहार आदि।

तेलंगाना के पलायार जलाशय की मछलियों की सघनता और संरचना को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों का पता लगाया गया और कैनोनिकल कोरस्पोंडेंस विश्लेषण द्वारा इसका मूल्यांकन किया गया। अध्ययन से यह पता चला कि मछली के सघनता और संरचना के लिए जल का पीएच, घुलित ऑक्सीजन, पानी का तापमान और पारदर्शिता जैसे कारक उत्तरदायी होते हैं। *सालमोंफेसिया बकाइला* और *एस उनत्राही* के लिए पीएच, *पुनटीयस सोफोर*, *एंब्नीफेरींगोडोन मोला*, *स्यूडैम्ब्रैसिस रांगा* और *मैक्रोनेथस पैन्कुलस* के लिए घुलित ऑक्सीजन महत्वपूर्ण कारक हैं जबकि कैटफिश, *स्पेराटा सिंधाला* और *मिस्टस कैवेसियस*, वायु श्वासी मछली, *चना पंकटेटा* घुलित ऑक्सीजन से कम से कम प्रभावित हैं।

पश्चिम बंगाल के पूर्व मिदनापुर जिले में तिलपिया की अधिक से अधिक मछलियां मारी पायी गईं। इसका कारण जानने के लिए इन जलक्षेत्रों का अध्ययन आणविक माइक्रोबायोलॉजिकल तकनीकों (molecular microbiological techniques) द्वारा किया गया। तिलपिया की उच्च मृत्यु दर की विस्तृत नैदानिक जांच से पता चला कि इन मछलियों में तिलपिया झील वायरस का संक्रमण हुआ है जिसके संबंधित रोगजनक बैक्टीरिया हैं - *एरोमानस काइवे*, *ए. हाइड्रोफिला*, *एडवर्डसिएला टारडा*, *लेबसिएला न्यूमोनि* और *स्यूडोमोनस एरुगिनोसा*। जल के हाइड्रो-इकोलॉजिकल प्राचल और मृदा रसायन के अध्ययन से पता चला है कि पर्यावरण दाब के कारण विशेष रूप से मछली प्रजातियों में इस संक्रमण का प्रसार हुआ।

सुंदरवन में कोविड महामारी का प्रभाव

कोविड -19 का कारण हुये लॉकडाउन का दुष्प्रभाव मात्स्यिकी क्षेत्र पर भी पड़ा है। सुंदरवन जैसे स्थानों इसके प्रभाव के अध्ययन के लिए संस्थान ने इसके गांवों और मछली बाजारों का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि यहाँ मछली व्यापार को लगभग 33 प्रतिशत हानि हुई है। इंडियन मेजर कार्प और मीडियम कार्प प्रजातियों के मछलियों की कीमत में 1.25 गुणा की वृद्धि हुई है। इसका कारण है ऐसे ज्वारनादमुख अंचल में अधिक मूल्य वाली प्रजातियों की उपलब्धता लगभग 50 प्रतिशत तक कम हो गयी है, साथ ही उनकी आपूर्ति अधिक से अधिक शहरी क्षेत्रों में बड़े बाजारों में होने लगी है। यहाँ छोटी देशी मत्स्य प्रजातियों का मूल्य 25 से 50 प्रतिशत तक कम कर दिया गया है। इसी प्रकार अन्य प्रजातियों का मूल्य भी विपणन सुविधाओं की कमी के कारण घटा दी गयी है।

वर्तमान में सुंदरवन क्षेत्र में मछली पकड़ने के लिए केवल 10 प्रतिशत नाव ही सक्रिय हैं, और वह भी केवल आधे मछुआरों के साथ और मछली पकड़ने की अवधि केवल एक-तिहाई कर दी गयी है। यहाँ के मछुआरों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे, मछलियों के विपणन में कमी, मछलियों को अन्य बाजारों में ले जाने के लिए स्थानीय स्तर पर बर्फ उपलब्ध नहीं है और इसलिए उन्हे सस्ते मूल्य पर स्थानीय बाजार में मछली बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

संस्थान द्वारा पश्चिम बंगाल में अम्फान चक्रवात प्रभावित चामता आर्द्रभूमि के मछुआरों को सहायता

संस्थान का सदैव से ही अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास के साथ प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य देने में अग्रणी रहा है। चाहे वह आईला प्रभावित सुंदरवन हो, या फ़ानी प्रभावित ओड़ीशा या फिर हाल में हुई कोरोना महामारी से प्रभावित मछुआरों। इसी क्रम में संस्थान ने दिनांक 20 मई 2020 को पश्चिम बंगाल में आए आमफन चक्रवात से प्रभावित पश्चिम बंगाल के उत्तरी 24 परगना के चामता आर्द्रभूमि के मछुआरों की आजीविका पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। इस चक्रवात का कारण पेन संरचनाएँ नष्ट हो गई हैं इसलिए संस्थान ने राहत प्रयास में अनुसूचित जाति (SCSP) उप-योजना के तहत यहाँ के मछुआरों को तकनीकी सहायता के अलावा मछली पालन के उपकरण जैसे पेन, मछली के बीज, मछली का चारा और मछली पकड़ने की नाव (Coracle) प्रदान किया है। इसके अलावा, यहाँ के स्थापित पेन क्षेत्रों में बीज उगाने के लिए चामता मछुआरा सहकारी समिति लिमिटेड को मछलियों के लिए 4.5 टन आहार (फीड) वितरित किया गया। इस फीड से बीज उत्पादन की लागत कम हो जाएगी और आर्द्रभूमि में मछली उत्पादन में वृद्धि होगी जिससे मछुआरों की आजीविका में सुधार करेगा। अनुमानतः इस आर्द्रभूमि से 10.00 लाख की अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

रवींद्र जयंती समारोह

संस्थान में रवीन्द्रनाथ टैगोर की जयंती 8 मई 2020 को मनाया गया। देश भर में चल रहे तालाबंदी के कारण सभी कर्मचारी इस साल सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग नहीं ले सके। निदेशक महोदय ने गुरुदेव की छवि को माला पहनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की और इस कठिन समय में टैगोर की रचनाओं से प्रेरणा लेकर जीवन के मूल्यों को विकसित करने का संदेश सभी को दिया।

संस्थान ने ओडिशा के अनुसूचित जाति के मछुआरों की आजीविका संवर्धन के लिए पोस्ट कोविड स्थिति में सलिया जलाशय को अंगीकृत किया



संस्थान और प्राथमिक मत्स्य सहकारी समिति ने मत्स्य विभाग, ओडिशा सरकार के परामर्श से एससीएसपी कार्यक्रम के तहत सलिया जलाशय में एक जलाशय वृद्धि कार्यक्रम शुरू किया है। 200 से अधिक अनुसूचित जाति के परिवार अपनी आजीविका के लिए सलिया जलाशय पर निर्भर हैं। इस जलाशय से कम से कम 30 टन को 60 टन तक उत्पादन में सुधार करने के लिए कार्यक्रम शुरू किया गया। कोरोना वायरस के प्रकोप से पहले, संस्थान ने उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में उन्नत फिंगरप्रिंट विकसित करने के लिए नर्सरी बढ़ाने का कार्यक्रम शुरू किया है। नर्सरी क्षेत्र के दो एकड़ क्षेत्र में आईएमसी मछली के फ्राई का स्टॉक 1.0 लाख नंबर को 0.50 लाख / एकड़ के स्टॉकिंग घनत्व के साथ किया गया था। नर्सरी अक्टूबर, 2019 के महीने में मछली के बीज का स्टॉक



किया गया था। COVID-19 महामारी की स्थिति की लॉकडाउन अवधि के दौरान, संस्थान के वैज्ञानिक मछुआरों के साथ लगातार संपर्क में थीं और उन्हें नर्सरी की देखभाल करने और नियमित रूप से मत्स्य पोन्नो को खिलाने की सलाह दी गई। दिनांक 21 और 22 मई 2020 को, संस्थान ने जलाशय में एक सफल मछली बीज भंडार कार्यक्रम का आयोजन किया। भंडारित उन्नत उँगलियाँ लगभग 30 ग्राम आकार की थीं। कैप्टिव नर्सरी में इन मछलियों के बीजों को उगाने का उद्देश्य फटे अंगुलियों का विकास करना है। जलाशय में इस मछली के बीज को स्टॉक करने के दौरान, सलिया जलाशय में भारतीय मेजर कार्पो की 25,000 नग विकसित अंगुलिकाओं को स्टॉक किया गया था। यह अनुमान लगाया जाता है कि इस मछली के बीज को लगभग भंडारित करने से, इस जलाशय से अतिरिक्त रूप से 10 टन मछली उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। यह सीड स्टॉकिंग का पहला चरण है और नर्सरी में लगभग 50,000 नंबरों का बाकी मछली बीज चरणबद्ध तरीके से जून के महीने में जारी किया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कोविड के दौरान मछुआरों की आय में वृद्धि करना है। इस अभिनव कार्यक्रम के कार्यान्वयन से सलिया जलाशय के आदिवासी मछुआरों के लिए ₹ 30.00 लाख की अतिरिक्त आय होगी।।

कार्यक्रम की योजना और डिजाइन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने की। महामारी कोविड 19 के खतरों को ध्यान में रखते हुए, मछुआरों के बीच फेस मास्क और सैनिटाइज़र के वितरित किया गया



था और सभी गतिविधियों को सामाजिक दूरी बनाए रखते हुये आयोजित किया गया। मछुआरों को एडवांस फिंगरिंग स्टॉकिंग के महत्व के बारे में जागरूक किया गया और बताया गया कि किस तरह से स्टॉकिंग से जलाशय से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के वेटलैंड में मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से मछुआरों की आजीविका में बढ़त

भारत में कोविड-19 के प्रकोप ने दो महीने के लिए देश में आपातकालीन तालाबंदी का आह्वान किया है, और इस घटना के कारण मांग और आपूर्ति, व्यापार और व्यापार, परिवहन और आपूर्ति में व्यवधान में तेजी से गिरावट आई है। आपूर्ति में व्यवधान के कारण इसने किसानों और मछुआरों के जीवन को प्रभावित किया है।

लॉकडाउन के इस चुनौतीपूर्ण समय के दौरान, बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के कोठिया मौन के मछुआरों की आजीविका को उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि और मछली पकड़ने के दिनों में वृद्धि के माध्यम से बढ़ाया गया। कोठिया मौन मोतिहारी शहर से 38 किमी की दूरी पर स्थित है। तेतरिया ब्लॉक मछुआ सहकारी समिति के नियंत्रण में वाटरबॉडी के आसपास रहने वाले मछुआरों द्वारा जल निकाय में मछली पकड़ना। 200 मछुआरों के परिवार इस मान में मछली पकड़ने के



माध्यम से अपनी आजीविका प्राप्त कर रहे हैं। सिविक अधिकारियों से अनुमति के बाद, लॉकडाउन अवधि के दौरान मछली पकड़ने के फसल का संचालन मई 2020 में इस वेटलैंड में शुरू किया गया था। आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा सिडीड प्रबंधन के लिए वेटलैंड जलाशयों के लिए जारी किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार, वेटलैंड में मत्स्य पालन किया गया था, जैसे फेस कवर का उपयोग करना। दो नावों के बीच 1.5 मीटर की सामाजिक दूरी और दो नावों के बीच 4 मीटर की दूरी बनाए रखें। 10 मछली पकड़ने के दिन में 3.6 टन मछली मछुआरों द्वारा काटी गई थी, जो केवल आर्द्रभूमि स्थल पर बेची गई थी। मछली पकड़ने में इंडियन मेजर कार्प रोहू, कतला, मृगल, एक्सोटिक कार्प अमूर कार्प, ग्रास कार्प और गडूसिया चापरा जैसी मछली शामिल हैं। लॉकडाउन अवधि के दौरान, मछुआरा सहकारी समिति ने ओपन वाटर फिशरीज के माध्यम से 4 लाख रुपये की कमाई की। आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने भागीदारी मोड में इसके द्वारा विकसित वैज्ञानिक प्रबंधन मानदंडों के कार्यान्वयन के लिए विकास शुरू किया। संस्थान द्वारा अपनाई गई तीन प्रमुख रणनीति इनपुट, आधारभूत संरचना और सूचना-



प्रसार का था, जो ऑक्स-बॉल झीलों के लिए कार्यान्वित किए गए पिछले डेढ़ साल के दौरान सीआईएफआरआई के तकनीकी हस्तक्षेपों ने कोठिया मान ने प्रति यूनिट प्रयास को पकड़ने में कई गुना सुधार किए



हैं, मछली पकड़ने के दिनों में 30 दिनों से 90 दिनों तक की वृद्धि और 55 से 160 किलोग्राम /

हेक्टेयर तक मछली की उपज होती है। डीडी न्यूज पटना, ज़ी न्यूज बिहार झारखंड, समैबिहार झारखंड, प्रभात खबर सहित प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इस परियोजना में सुधार की व्यापक कवरेज दी और यह क्षेत्र के मछुआरों को प्रेरित करने में मदद करेगा ताकि राज्य में नीली क्रांति के लिए इस तरह के वैज्ञानिक प्रबंधन मानदंडों को अपनाया जा सके।

संस्थान में स्वच्छता अभियान की पहल

27 मई 2020 को संस्थान मुख्यालय में 3 बजे एक स्वच्छता अभियान चलाया गया। विनाशकारी चक्रवात आमफान से संस्थान के परिसर में कई पेड़ गिर गए और इसी कारण संस्थान को स्वच्छ बनाने के लिए सभी कर्मचारियों ने इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए सभी कार्मिकों ने अलग अलग छोटे छोटे समूह में विभाजित होके और सामाजिक दूरी के निदेशों को मानते हुए इस अभियान में भाग लिया। सभी ने मास्क पहना। यह



कार्यक्रम संस्थान के निदेशक महोदय की प्रेरणा और देख रेख में संभव हुआ।

महत्वपूर्ण बैठकें

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 4 मई 2020 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के माननीय महानिदेशक की अध्यक्षता में आईसीएआर-वर्ल्ड फिश सहयोगी परियोजना बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 3 मई 2020 को उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के साथ बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य मात्स्यिकी पर कोविड 19 के दुष्प्रभावों की समीक्षा करना तथा भावी कार्यक्रमों को सुनिश्चित करना था।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 3 मई 2020 को संस्थान में चलित परियोजनाओं की समीक्षा के लिए वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा बैठक में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 4 मई 2020 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के माननीय महानिदेशक की अध्यक्षता में आईसीएआर-वर्ल्ड फिश सहयोगी परियोजना बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया। संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 6 मई, 2020 को निदेशक, अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी, मत्स्य विभाग, भारत सरकार के साथ एक बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 8 मई 2020 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) के साथ एक बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य वर्ल्ड फिश परियोजनाओं की समीक्षा करना था।

संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 मई 2020 को राष्ट्रीय योजना कार्यशाला पर एक वेबिनार में भाग लिया। यह वेबिनार यूएनडीपी और राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद द्वारा “नदीय एवं समुद्री जल में प्लास्टिक कचरा”, विषय पर आयोजित किया गया था। इसमें निदेशक महोदय ने वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा “ गंगा नदी के तलछट में माइक्रो प्लास्टिक के नमूने और विश्लेषण पर दृष्टिकोण (Approach of MPs sampling and analysis in sediments of River Ganga)” विषय पर एक प्रस्तुति दी।



संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 मई 2020 को नमामि गंगे परियोजना की कार्यकारी परिषद की बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य नमामि गंगे परियोजना की उपलाधियों की समीक्षा करना तथा भावी कार्यक्रमों को सुनिश्चित करना था।

संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 मई 2020 को नमामि गंगे परियोजना की कार्यकारी परिषद की बैठक में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य नमामि गंगे परियोजना की उपलाधियों की समीक्षा करना तथा भावी कार्यक्रमों को सुनिश्चित करना था।

प्रशिक्षण

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 1 मई 2020 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, त्रिपुरा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षा में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा अपने व्याख्यान दिये।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने दिनांक 13 मई 2020 को पश्चिम बंगाल प्राणी एवं मात्स्यिकी विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता के छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षा में वीडियो कोन्फ्रेंसिंग द्वारा अपने व्याख्यान दिये।

शोक सन्देश



सुकन्या सोम (जन्म तिथि 20-06-1991) की नियुक्ति संस्थान में 04-01-2018 को कृषि विस्तार एवं प्रसार वैज्ञानिक के रूप में हुई। एक असाधारण प्रतिभाशाली वैज्ञानिक के साथ साथ एक अच्छी इंसान भी थी। आईएआरआई से एग्रिकल्चरल एक्सटेंशन में उन्हे स्वर्ण पदक प्राप्त था। 17 मई 2020 उन्होने इस जगत से विदाई ली। पूरा सिफरी परिवार उनके दिवांगत आत्मा की शांति कामना करता है।

सम्पादन मण्डल

सम्पादन मण्डल के ओर से आप समस्त पाठकों को जून, 2020 का यह अंक प्रस्तुत है। आप सभी के बहुमूल्य सुझाव के लिए आप सभी को हार्दिक धन्यवाद। आशा है, आगे भी आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलता रहेगा।

धन्यवाद।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव ताल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम **फोटोग्राफी:** सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्था,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in